P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-III* November-2015

महात्मा गाँधी और जय प्रकाश नारायण के चिन्तन में समाजवाद

सारांश

सामूहिक कल्याण की दृष्टि से समाजवाद को श्रेयस्कर माना जाता है। महात्मा गाँधी जी एवं जयप्रकाश नारायण के चिन्तन में समाजवाद के साधनों को पृथक–पृथक परिभाषित किया गया है गाँधी जी का समाजवाद समाज के लिए ही नहीं व्यक्ति के लिए भी है। एक ओर गाँधी जी के समाजवाद में वर्ग समन्वय की भावना दिखाइ देती है वही दूसरी ओर जयप्रकाश नारायण के समाजवादी चिन्तन में सामाजिक आर्थिक पुर्नसंरचना दिखाई देती है। प्रस्तुत शोध पत्र में महात्मा गाँधी और जय प्रकाश नारायण के चिंतन में समाजवाद का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है प्रस्तुत शोधपत्र आलेख पुस्तकों एवं स्वयं क सोच–विचार को आधार मानकर लिखा गया है। शोधपत्र में अनुभव प्रणाली को अपनाया गया है। शोधपत्र में विषय से संबंधित तथ्यों का संकलन द्वितीयक स्त्रोतों द्वारा किया गया है।

मुख्य शब्द : समाजवाद, राजनीतिक, आर्थिक, समाज, व्यक्तिगत, व्यक्ति।

चित्रा प्रभात
प्राध्यापक,
राजनीतिशास्त्र विभाग,
शासकीय तिलक महाविद्यालय,
कटनी

प्रस्तावना

देश काल, परिस्थिति और जनता के चरित्र एवं आवश्यकतानुसार समाजवाद की परिभाषाओं में कई प्रकार के परिवर्तन किये जाते रहे हैं वास्तव में समाजवाद का प्रयोग इनक व्यापक और विभिन्न ग्रंथों में किया जाता रहा है कि उसकी कल्पना करना भी सम्भव नहीं है।

समाजवाद एक बौद्धिक सिद्धान्त होते हुए भी एक शासन पद्धति है एवं साथ में एक राजनीतिक अन्दोलन के रूप में जाना जाता है। इसके इस प्रकार कई व्यापक रूप है। सी.ई.एम. जोड़ ने बिल्कुल सही कहा है ''समाजवाद उस टोप की तरह है जिसे इतने व्यक्यिों ने पहना है कि, उसका स्वरूप ही नष्ट हो गया है।''[1] अतः यह कह सकते हैं कि ''समाजवाद उस गिरगिट के समान है जो वातावरण के अनुसार अपना रंग बदलता है।''

जहाँ एक ओर व्यक्तिवाद में व्यक्ति के कल्याण की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है, वहीं समाजवाद में समाज के सामूहिक कल्याण को सबसे महत्वपूर्ण माना जा है। समाज के हित के आगे व्यक्ति का हित गौण है। समाजवादी चिन्तक व्यक्ति की व्यक्तिगत सम्पत्ति को समाप्त करना चाहते है क्योंकि उनका विश्वास है कि, व्यक्तिगत सम्पत्ति भी ईश्वर की देन है। अतः उस पर किसी भी एक व्यक्ति का अधिकार नहीं होना चाहिए उसका उपयोग समाज के सभी लोग समान रूप से करें।

समाजवाद ने वर्तमान सामाजिक व्यवस्था की बुराइयों तथा विभिन्न विषमताओं की ओर ध्यान आकर्षित करके तथा सभी अच्छे व्यक्तियों के हृदय में उसके निदान करने की इच्छा जाग्रत करके एक वास्तविक सेवा की है। समाजवाद में राजनीतिक और आर्थिक कार्यो का मिश्रित रूप है अतः दोना को अलग करना एक असम्भव कार्य है। अधिकतर समाजवादियों की यह धारणा है कि राज्य को राजनीतिक आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में लोक कल्याण की दृष्टि से सभी आवश्यक कार्य करने चाहिए। किसी ने ठीक ही कहा है ''समाजवाद वास्तव में दर्शन का एक पूर्ण संसार है। यह धर्म क्षेत्र में लौकिक समाजवाद का, नैतिकता के क्षेत्र में एक अत्यंत आशावाद का, दर्शन में एक प्रकृतिवादी वस्तुवाद का तथा पारिवारिक क्षेत्र में पारिवारिकता का सूचक है।''

समाजवाद किस तरह लाया जाय इसके विषय पर भी भिन्न–भिन्न विद्वानों के अनेक विचार है। किसी क्रान्तिकारी साधनों का सहारा लिया ता कुछ शान्तिपूर्ण साधनों का, कुछ ने उसे एक राष्ट्र तक सीमित रखना चाहा तो कुछ इसे अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन बनाया। समाजवाद को लाने के लिये कुछ राजनीतिक कार्यवाही, तो कुछ हड़ताल का समर्थन करते है। यही नहीं कुछ समाजवादी राज्य के लिए लोकतन्त्रीय व्यवस्था को अंगीकार करते है तो कुछ श्रमिकों की तानाशाही को। भारत के सभी राजनीतिक दल अपने–अपने ढंग का समाजवाद

लाना चाहते है। मेरे इन शोधपत्र में मैंने महात्मा गाँधी और जय प्रकाश नारायण के समाजवाद संबंधी विचारों का अध्ययन किया है।

गाँधी और समाजवाद

महात्मा गाँधी का समाजवाद अद्वितीय और अनुपम है यह एक सम्पूर्ण मानव सम्पूर्ण समाज के संतुलित अध्ययन पर आधारित है। उन्होने व्यक्ति को एक भौतिकवादी बताने के साथ–साथ एक आध्यात्मिक भी माना है। उनका समाजवाद केवल समाज के लिए ही नहीं वरन् वह व्यक्ति के लिए भी है। उनका समाजवाद बिना ''वाद'' का समाजवाद है।

महात्मा गाँधी के समाजवाद में रस्किन की पुस्तक ''अन टू दिस लास्ट'', टालस्टाय की पुस्तक ''किंगडम ऑफ गॉड विद इन यू'' और ''भगवद् गीता'' का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। महात्मा गाँधी का समाजवाद एक प्राकृतिक समाजवाद है। महात्मा गाँधी न समाजवाद की अभिव्यक्ति सर्वोदय की अवधारणा के रूप में की है जिसमें सभी व्यक्तियों का उदय है। समाजवादी चिन्तन व्यक्ति की निजी सम्पत्ति को अस्वीकारता है और मानता है कि राज्य के रूप में संगठित समाज को सम्पूर्ण धन का स्वामी होना चाहिए तथा उसे समस्त श्रम संचालन एवं समस्त सम्पत्ति का समान वितरण करना चाहिए।

महात्मा गाँधी का समाज सात्विक दृष्टि से वेदान्त के ''ईशावास्यमिदं'' के आधार पर ''आत्माओं की मूलभत एकता'' पर आधारित ''सर्वभूत हिते रताः'' या आत्मवत सर्वभूतेषु या ''वसुधैव कुटुम्बकम'' के नीतिवाक्य का यथार्थ है। ''सबों के उदय में मेरा भी उदय'' यह कोई परोपकार अहिंसा और नैतिकता, आध्यात्मिकता और मानवता के नियमों पर आधारित है। महात्मा गाँधी का समाजवाद बेन्थम के सिद्धान्त ''अधिकतम लोगों का अधिक से अधिक सुख'' के आदर्श सिद्धान्त में भी आगे है। महात्मा गाँधी ने मानव की सेवा को ईश्वर की पूजा माना है उनके विचार से व्यक्ति का स्थान व्यवस्था समाज व राज्य सबसे ऊँचा और सबसे प्रथम है अहिंसा के संदर्भ में जब हम ''दूसरों को खाकर जिओ'' की स्थिति में पहुँच रहे है जिसमें उपयोगितावाद में निहित व्यक्तिगत लाभ को स्पर्द्धा की गंध अच्छी नहीं लगती है।[2] महात्मा गाँधी का सिद्धान्त डार्विन के सिद्धान्त ''जो सबसे अधिक सक्षम है, वही जीवन संग्राम में बचेगा'' की तरह नहीं है। उनका सिद्धान्त सर्वोदय का सिद्धान्त है।

सर्वोदय का अर्थ है कि ''सभी का सर्वांगीण विकास'' इसमें न भौतिकता की अवहेलना है, न आध्यात्मिकता की उपेक्षा है। यह सन्यासवाद और भोगवाद के बीच की मध्यम प्रतिपदा है। ''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वेसन्तु निरामयाः सर्वेभद्राणि पश्यन्तु'' के इस बोध वाक्य में मानसिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक सुखों का समन्वय है।[3] समाजवाद व्यक्ति की निजी सम्पत्ति को अस्वीकार करता है और यह मानता है राज्य के रूप में संगठित समाज का सम्पूर्ण उत्पादन और वितरण के समस्त साधनों पर अधिकार होता है इससे स्पष्ट है कि समाजवाद का सम्बन्ध समाज में सम्पत्ति के वितरण से है क्योंकि वह सम्पत्ति को समाज समाज की सभी बुराईयों की जड़ मानता है।

महात्मा गाँधी के समाजवाद में वर्ग संघर्ष की जगह वर्ग–समन्वय की भावना दिखायी देती है। वे मानते है कि मानव प्रकृति से अच्छा है, उनका मानव की अच्छाई में विश्वास है इसलिए वे विचार–परिवर्तन, हृदय परिवर्तन और परिस्थिति परिवर्तन में विश्वास करते है उनके समाजवाद का आशय समाज की समस्त बुराईयों के निराकरण से है। महात्मा गाँधी के समाजवाद में निम्नलिखित सिद्धान्त दिखायी देते है –

1. न्यासितावाद ट्रस्टी शिप–जिसमें सम्पत्ति को ईश्वर की सम्पत्ति माने और ट्रस्टी की तरह उसका प्रबन्ध करें।
2. सर्वोदय–जिसमें क्षमता के अनुसार प्रत्येक से काम लिया जाय और आवश्यकतानुसार प्रत्येक को दिया जाय। उसका स्वेच्छा से सभी पालन करें।
3. वर्णाश्रम धर्म–इसमें सभी धन्धे व श्रम समान प्रतिष्ठा के पात्र होंगे।
4. शरीर श्रम–प्रत्येक व्यक्ति को शरीर–श्रम (कायिक श्रम) करना चाहिए।

महात्मा गाँधी ने समाजवाद के सम्बन्ध में एक बार कहा था कि, जहां तक मै जानता हूँ, समाजवाद में समाज के सार सदस्य समान होते है, न कोई ऊँचा और न कोई नीचा। किसी आदमी के शरीर में सिर इसलिए ऊँचा नहीं है कि वह सबसे ऊपर है और पांव के तलवे इसलिए नीचे नही है कि, वे जमीन को छूते है। जिस तरह मनुष्य के शरीर के सभी अंग बराबर है उसी तरह समाज रूपी शरीर के सभी अंग बराबर है। यही समाजवाद है।[4]

प्रकृति से समाज के सभी व्यक्ति समान हो सकते है लेकिन एक न्याय पूर्ण सामाजिक व्यवस्था में सभी के लिए समान विकास के समान अवसर हो सकते है। महात्मा गाँधी भूमि पर समान स्वामित्व में विश्वास करते है। वे लिखते है कि वास्तविक समाजवाद वह है जिसमें ''सबै भूमि गोपाल की'' का सिद्धान्त है।[5] व्यक्तियों के बीच दीवार व्यक्तियों ने बनायी है तो व्यक्ति उन्हे मिटा भी सकते हैं।

महात्मा गाँधी के समाजवाद और शास्त्रीय समाजवाद में कुछ समानतायें देख सकते, है ये ह–

1. महात्मा गाँधी आर्थिक समानता में विश्वास करते है। वे समाजवाद के सिद्धान्त ''प्रत्येक अपनी आवश्यकताओं के अनुसार'' में विश्वास करते हैं।
2. सभी समाजवादियों की तरह महात्मा गाँधी ''व्यक्तिगत सम्पत्ति का विरोध करते हैं। क्योंकि उन्हाने व्यक्तिगत सम्पत्ति को सभी बुराइयों की जड़ माना है।
3. सभी समाजवादियों की तरह महात्मा गाँधी के लिए व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए।
4. महात्मा गाँधी व्यक्ति के पूर्ण विकास में विश्वास करते हैं, न कि पूँजीवादियों की शोषण की प्रवृत्ति में।
5. सभी समाजवादियों की तरह महात्मा गाँधी का मत है कि अर्थव्यवस्था में उत्पादन व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होना चाहिए न कि व्यक्ति के व्यक्तिगत लाभ के लिए ('मास प्रोडक्शन' की जगह 'प्रोडक्शन बाई मासेज्') होना चाहिए।

महात्मा गाँधी के समाजवाद और शास्त्रीय समाजवाद में कुछ असमानतायें भी देखने को मिलती है जो इस प्रकार है–

1. समाजवादी मूल्यों के लिए समाजवादी औद्योगिकरण को पहली शर्त मानते है जबकि महात्मा गाँधी ने इसमें कभी विश्वास नहीं किया।
2. समाजवादी व्यक्ति की इच्छाओं में विश्वास करते है जबकि महात्मा गाँधी व्यक्ति की सरलता में विश्वास करते हैं।
3. समाजवादी अपने साध्यों की प्राप्ति के लिए साधनों की पवित्रता का कोई ध्यान नहीं रखते है जबकि महात्मा गाँधी ने अपने साध्यों से कहीं ज्यादा साधनों को अधिक महत्व दिया है।
4. समाजवादी मजदूर वर्ग में चेतना का विकास करने पर जोर देते हैं और पूंजीवादी व्यवस्था को नष्ट करने के पक्षधर है। जबकि महात्मा गाँधी आम जनता में चेतना का विकास करने पर जोर देते हैं। पूंजीवादी व्यवस्था को सुधारने की बात करते है, सत्याग्रह द्वारा पूंजीपतियों के हृदय परिवर्तन की बात करते हैं।
5. समाजवादी आर्थिक और राजनीतिक केन्द्रोयकरण की बात करते है। जबकि महात्मा गाँधी आर्थिक और राजनीतिक शक्तियों का विकेन्द्रीकरण करने की बात करते हैं। महात्मा गाँधी ने श्रम और पूंजी के संघर्ष का समाधान 'ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त देकर किया है। उनकी विकेन्द्रित अर्थ व्यवस्था का ध्येय लोगों को सुखी बनाना है। साथ में उनको सम्पूर्ण बौद्धिक और नैतिक उन्नति भी करना है।

महात्मा गाँधी अहिंसा और 'ट्रस्टीशिप' के सिद्धान्त के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाने की बात करते हैं। जबकि साम्यवादी संघर्ष के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाने की बात करते हैं। महात्मा गाँधी मानते है समाज में सामाजिक उद्देश्य या सामाजिक हित की जगह आर्थिक तत्व प्रभावशाली हो जाता है, तो समाज में हिंसा और शोषण का बोल बाला हो जाता है। इसलिये महात्मा गाँधी घृणा और शत्रुता की जगह अहिंसा और नीति बल पर आधारित प्रेम बल व प्रेम की शक्ति, नैतिक शक्ति की बात करते है। उन्होने इसलिये राज्य के स्वामित्व की जगह जनता की शक्ति को महत्व दिया है।

महात्मा गाँधी के समाजवाद में राजा और कृषक, गरीब और अमीर, मालिक और मजदूर सभी एक समान है। इनके समाजवाद में कोई द्वैधता नहीं है।[6] महात्मा गाँधी का विश्वास है कि समाजवादियों क मूल्य समाज में समानता, स्वतन्त्रता और मातृत्व की भावना की स्थापना मानवता के प्रेम से ही हो सकती है, न कि हिंसा, घृणा, चालबाजी, बदले की भावना से। इसलिए ''सत्य और अहिंसा'' से ही समाजवाद की स्थापना हो सकती है।[7] आर्थिक समानता से महात्मा गाँधी का मतलब सभी को एक समाजन धन की व्यवस्था या एक समान आमदनी कराना नहीं है। उसका मतलब यह है कि, प्रत्येक व्यक्ति के लिए उचित घर, पर्याप्त एवं संतुलित भोजन, शरीर ढकने के लिए खादी होनी चाहिए आय की असमानता को अहिंसा के साधनों के माध्यम से ही समाप्त किया जा सकता है।[8]

उन्होने आगे बताया है कि साधन और साध्य में बीज और पेड़ का सम्बन्ध है। जैसा बीज डालोगे वैसा ही फल पैदा होगा। हम वैसा ही काटेंगे जैसा बोयेंगे।[9] हिंसा के माध्यम से जो लक्ष्य प्राप्त किये जाते है वे दूषित और नाशवान हो सकते हैं। यदि आपके साधन पवित्र और शुद्ध है तो अपने आप में अच्छे होंगे। आपको साध्यों की चिन्ता नहीं करनी है।[10]

इस प्रकार महात्मा गाँधी साध्य और साधन की परस्पर एकता और पवित्रता पर बल देते है। महात्मा गाँधी ने श्रम और पूंजी के सहयोगपूर्ण व समन्वयात्मक सम्बंधों पर बल दिया है। महात्मा गाँधी मार्क्स के वर्ग समन्वय पर बल देते हैं।

कार्ल मार्क्स वर्ग–संघर्ष को समाजवाद लाने का एक आवश्यक साधन मानते है जबकि महात्मा गाँधी के अनुसार वर्ग संघर्ष पूंजी एवं श्रम दोनो के लिए खतरनाक है। मार्क्स आर्थिक पक्ष को समाज के सभी परिवर्तनों की जड़ मानते है। समाज के सभी परिवर्तनों के लिए पूर्ण रूप से आर्थिक कारण ही उत्तरदायी है। महात्मा गाँधी इस विचार के पूरी तरह विरूद्ध है। उन्होने इसके लिये नीति बल पर आधारित विचारों और मानव के आध्यात्मिक पक्ष पर अधिक बल दिया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मार्क्सवादी समाजवाद राज्यवाद के सिद्धान्त पर आधारित है जिसमें देश की सम्पूर्ण सम्पत्ति व उद्योग धन्धों पर राज्य का स्वामित्व होता है। महात्मा गाँधी के समाजवाद में मानवतावादी पक्ष पर बल दिया है। जिसमें वे मानव के सम्पूर्ण विकास एवं कल्याण की बात करते है जो नैतिक और आध्यात्मिक की उन्नति से ही सम्भव हा सकती है। इसके लिए महात्मा गाँधी के समाजवाद में समाज हित के साथ–साथ व्यक्ति स्वतन्त्रता, व्यक्ति की समानता, व्यक्ति का विकास और व्यक्ति की अस्थिरता पर जोर दिया है।

महात्मा गाँधी का समाजवाद मानव की श्रम की प्रतिष्ठा, मानव सेवा, मानव प्रेम और सहयोग व परस्पर समन्वय की भावना पर आधारित है। उन्हाने समाजवाद को जीवन जीने की कला माना है, समाजवाद सहयोग की भावना है, जिसमें हिंसा और घृणा का कोई स्थान नहीं है। महात्मा गाँधी का समाजवाद सर्वोदय से अलग नहीं है। वे इसमें एक समन्वित और सन्तुलित समाज की बात करते हैं जिसमें अमीर गरीब दोनों की स्वतन्त्रता और समानता होगी। उन्होने भौतिक शक्ति और आध्यात्मिक शक्तियों के बीच में एक न्यायपूर्ण सन्तुलन और दृष्टिकोण बनाने का प्रयास किया है। अहिंसक साधनों के माध्यम से लाया गया समाजवाद ही स्थायी और जनता के लिए कल्याणकारी सिद्ध होगा। महात्मा गाँधी का समाजवाद संसार के समाजवादों में एक अद्वितीय अनुपम समाजवाद है।

जयप्रकाश नारायण एवं समाजवाद

महात्मा गाँधी जयप्रकाश नारायण को भारत में समाजवाद का अधिकृत विद्वान मानते हैं। उनके शब्दों में ''वे सामान्य कार्यकर्ता नहीं है, वे समाजवाद के अधिकारी है हम यह कह सकते है कि पाश्चात्य समाजवाद के सम्बन्ध में जो वे नहीं जानते वह भारत में कोई नहीं जानता।[11] जय प्रकाश नारायण स्वतंत्रता संग्राम के संघर्षरत सिपाही रहे हैं। ब्रिटिश समाजवादी नेता रेमजे मैक्डोनाल्ड के अनुसार समाजवाद के विकास के इतिहास

को परिशीलन करने के लिए जिन चरित्रों का अवलोकन करना होगा उनमे जयप्रकाश नारायण का स्थान अग्रगण्य है।[12]

जय प्रकाश नारायण समाजवाद को आर्थिक समाजिक पुर्नसंरचना का सिद्धान्त मानते हैं। वे समाज के सभी पक्षों का पुनर्गठन व पुनर्रचना करना चाहते है। उनका उद्देश्य सम्पूर्ण समाज का समन्वित और संतुलित विकास करना है।[13] सन् 1929 से 1946 तक जयप्रकाश नारायण पक्के समाजवादी रहे। परन्तु भारतीय साम्यवादी और सोवियत संघ के साम्यवादी उन्हे अपने विचारे से प्रभावित नहीं कर पाये। उनका हिंसात्मक और क्रांतिकारी साधनों में कोई विश्वास नहों था।

वे समाजवाद को सामाजिक आर्थिक पुनर्निर्माण की एक पद्धति मानते है, समाजवाद व्यक्तिगत आचरण की संहिता नहीं है, वह हमारे आपके व्यक्तिगत अभ्यास की कोई चीज़ नहीं है और न वह शीश महल में निर्मित की जा सकने वालो वस्तु है। जब हम भारत में समाजवाद लाने की बात करते है तो हमारा तात्पर्य देश का सम्पूर्ण आर्थिक, सामाजिक, उनके खेतों, खलिहानों, कारखानों, विद्यालयों, नाटक शालाओं आदि का पुनः निर्माण करना है।[14]

इस अवधि में जय प्रकाश नारायण मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद में विश्वास करते थे। उनका मानना था कि भौतिक बल सामाजिक और व्यक्तिगत संस्थाओं को प्रभावित करता है। मनुष्य के अच्छे व बुरे विचारों का निर्धारण उन परिस्थितियों में होता है जिनमें वह रह रहा है, वैसा ही सोचता है। मार्क्सवादी विचारधारा से मनुष्य के विचारों, मूल्यों, आदर्शों का निर्धारण वर्ग विचारधाराओं और वर्ग हित से होता है। मार्क्सवाद के प्रभाव ने जयप्रकाश नारायण को पूंजीवादी व्यवस्था का शत्रु बना दिया, उसके विरोध में सोचने के लिए बाध्य किया। उन्हाने मानव की स्वतन्त्रता को अपने विचारों में महत्वपूर्ण स्थान दिया। मार्क्सवाद के प्रभाव से उनका मानना था कि–

1. पूंजीवादी समाज व्यवस्था में राज्य व्यवस्था सम्पूर्ण समाज के कल्याण के लिए कोई प्रभावशाली काम नहीं कर सकती है।
2. मनुष्य के विचार और उनके सामाजिक सम्बन्ध उन आर्थिक परिस्थितियों से निर्धारित होते है।
3. राज्य एक मशीन है जिससे एक वर्ग दूसरे वर्ग के ऊपर शासन करता है।[15]

वे सामाजिक और आर्थिक समानता में विश्वास करते हैं। उनके लिए समाजवाद एक सिद्धान्त होने के साथ–साथ योजना की तकनीकी भी है, इसमें सम्पूर्ण समाज के सभी पक्षों का पुनर्निर्माण निहित है। उनका उद्देश्य एक न्यायपूर्ण और सन्तुलित समाज का विकास करना है।[16] इसलिए जयप्रकाश नारायण ने मार्क्सवाद को ही समाजवाद का वास्तविक रूप माना है। भारत के साम्यवादियों के आचरण ने उन्हे मार्क्सवाद के सम्बन्ध में पुनः विचार करने के लिये बाध्य किया।[17] भारतीय साम्यवादी दल की इस आन्दोलन सम्बन्धी धारणा से उन्हे घोर निराशा हुई। भारतीय साम्यवादी दल एक स्वतन्त्र अभिकरण न होकर मास्को का औजार है। उस दल के सदस्यों की मूल भक्ति पहले सोवियत संघ के प्रति है न कि अन्य किसी के प्रति। स्मरणीय है कि लेनिन के बाद स्टालिन रूस का सर्वेसर्वा बन गया। धीरे–धीरे सत्ता उसके हाथों में केन्द्रित होती गयी। सोवियत संघ में साम्यवाद के नाम तानाशाही की स्थापना की गयी।

साम्यवाद ने जयप्रकाश नारायण के लिये मानवीय सभ्यता को नैतिकता विहीन आधार प्रदान किया है। यह सभ्यता है जिसमें व्यक्ति एवं सामाजिक जीवन का हर पहलू शासक द्वारा नियंत्रित किया जाता है। जीवन का कोई क्षेत्र उसके हस्तक्षेप से परे नहीं है। साम्यवादी समाज की अपनी ही आर्थिक और राजनीतिक संरचना और सैद्धान्तिक संयुक्तिकरण होता है। जो प्रायः वास्तविकता से उतना ही दूर है जितना कि दक्षिणी ध्रुव उत्तरी ध्रुव से है।

जयप्रकाश नारायण का कथन है कि यदि मार्क्स आज सचमुच जीवित होता तो किसी तानाशाही की उसने सबसे पहले निन्दा की होती। स्टालिन की नीति मार्क्सवाद–लेनिनवाद के विपरीत थी।[18] साम्यवाद वर्ग विहीन, शासक विहीन व एक राज्य विहीन अवस्था यही मार्क्स का सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व है। इसका सिद्धान्त है कि सभी व्यक्ति योग्यतानसार, क्षमतानुसार कार्य करेंगे, और आवश्यकतानुसार प्राप्त करेंगे।

साम्यवाद व्यवस्था के लिए साधन की पवित्रता का कोई महत्व नहीं है। मानव कल्याण का लक्ष्य रखके द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद सर्वसत्तावादी राज्य की धारणा के रूप में पतित हो चुका है। मार्क्सवाद ऐसा कोई आदेश नही देता है कि साधन की पवित्रता महत्वहीन है।

अतः स्पष्ट है कि जयप्रकाश नारायण साम्यवादियों के सर्वाधिकारवादी रूप को वैयक्तिक स्वतन्त्रता विरोधी होने के कारण स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। उन्हाने समाजवाद की स्थापना के लिए दो मार्ग बतलाये–

1. हिंसात्मक या वर्गान्तकारी पद्धति द्वारा
2. शान्तिपूर्ण या लोकतान्त्रिक पद्धति द्वारा

समाजवाद की स्थापना दोना ही तरीकों से हो सकती है। लेकिन किस तरीके से उद्देश्य को प्राप्त किया जाय, यह सम्बन्धित देश की ऐतिहासिक, एवं वस्तुगत परिस्थितियों पर ही निर्भर करता है। वे भारत में समाजवाद की स्थापना के लिए लोकतान्त्रिक पद्धति अपनाने की बात करते हैं। उन्हे भारतीय साम्यवादी दल की हत्या, लूट आदि हिंसात्मक कार्यवाहियों के कारण इनके तरीकों में विश्वास नहीं था। जयप्रकाश नारायण के अनुसार "भारत और सोवियत संघ की परिस्थतियाँ और वातावरण दोनो ही भिन्न है।[19] इसलिए दोनो ही देशों में समाजवाद एक समान पद्धति एवं तरीकों से नहीं लाया जा सकता।

1934 में जयप्रकाश नारायण ने अखिल भारतोय समाजवादी कांग्रेस के 15 कार्यक्रमों पर प्रकाश डालते हुए मार्क्सवादी विचारों एवं कार्यक्रमों के बारे में बताया–

1. सभी शक्तियों का उत्पादक वर्ग को हस्तांतरण।
2. राज्य द्वारा नियोजित एवं नियन्त्रित देश की अर्थव्यवस्था का विकास करना।
3. उत्पादन और वितरण के बड़े उद्योगों–रेल, जहाज, खनिज, खान, स्टील, कॉटन, जूट, बैंक, बीमा, और जनता के उपयोगी विभागों का राष्ट्रीयकरण (सामाजिक करण करना)

4. विदेशी व्यापार पर राज्य का एकाधिकार।
5. आर्थिक जीवन के समाजीकृत क्षेत्र में उत्पादन, वितरण और ऋण सम्बन्धी संस्थाओं की स्थापना।
6. राज्यों और जमींदारों तथा अन्य सभी शोषक वर्गों का बिना क्षति–पूर्ति के उन्मूलन।
7. किसानों के बीच में भूमि का पुनः वितरण।
8. राज्य द्वारा सहकारी एवं सामूहिक कृषि को प्रोत्साहित करना और प्रोन्नति करना।
9. किसानों और मजदूरों द्वारा लिए गये ऋणों का परिसीमन।
10. श्रम करने या पोषण पाने के अधिकारों को राज्य द्वारा मान्यता।
11. आवश्यकतानुसार काम और योग्यता के अनुसार दाम के आधार पर आर्थिक वस्तुओं का वितरण और उत्पादन।
12. व्यवसाय के आधार पर वयस्क मताधिकार।
13. राज्य द्वारा किसी धर्म का समर्थन न करना। विभिन्न धर्मों के प्रति भेदभाव न करना और जातियों और सम्प्रदायों के आधार पर भेदभाव को मान्यता न देना।
14. राज्य द्वारा स्त्री पुरूष के बीच भेदभाव न करना।
15. भारत के तथाकथित सार्वजनिक ऋणों की अस्वीकृति।[20]

जयप्रकाश नारायण के अनुसार जनता को राजनीतिक एवं लोक तान्त्रिक ढंग से स्वतन्त्र करना, समृद्ध एवं सुखी बनाना, सभी प्रकार के शोषण के तरीकों से मुक्त करना और विकास के लिये अनियन्त्रित अवसर देना है तो समाजवाद रूपी लक्ष्य की ओर हम बढ़ना होगा। भारत में वे सभी परिस्थितियाँ विद्यमान है जो समाजवाद की स्थापना के लिए आवश्यक है यथा निर्धनता, भुखमरी, एवं अभाव, अमीर–गरीब का व्यापक भेद, बहुसंख्यक वर्ग का धनी वर्ग द्वारा शोषण, उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व आर्थिक और सामाजिक विषमता इत्यादि।[21] इस प्रकार वे एक ऐसी क्रान्ति में विश्वास करते है जिसका समर्थन जनता से हो। इस सामाजिक क्रान्ति में सभी व्यक्तियों के लिए शर्त स्वतन्त्रता होनी चाहिये। वे अपने विचारों को लोकतान्त्रिक तरीके से व्यक्त करें। इस प्रकार जयप्रकाश नारायण हमेशा ही स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र में विश्वास करते थे–उनका कभी भी तानाशाही में विश्वास नहीं था। सोवियत संघ के अनुभवों से जयप्रकाश नारायण बताते है कि पूंजीवाद के नष्ट करने का नाम समाजवाद नहीं है। समाजवाद में पूंजीवाद के नष्ट होने के साथ बड़े उद्योगों का व्यापार, बैंक, कृषि, बीमा, इस्पात, इत्यादि का राष्ट्रीयकरण भी होता है।[22] इस प्रकार वे एक नये प्रकार के समाजवाद की खोज में थे। वे न केवल पूंजीवाद की बुराईयों को नष्ट करना चाहते थे बल्कि वे व्यक्ति की स्वतन्त्रता को समाज के सभी प्रकार के शोषणों से अक्षुण्ण रखना चाहते थे।

जयप्रकाश नारायण के अनुसार समाजवाद में व्यक्ति की स्वतन्त्रता सर्व प्रथम ''लोकतान्त्रिक समाजवाद में लोकतान्त्रिक साधन–शान्तिपूर्ण तकनीक और रचनात्मक कार्यक्रमों के द्वारा ही इससे अपने उद्देश्य की प्राप्ति की जा सकती है।[23] समाजवादियों का उद्देश्य पूंजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने और एक पार्टी की तानाशाही की स्थापना करना नहीं है। वे एक एसी समाज की रचना करना चाहते है जिसमें लोग स्वतन्त्र और समान है इस प्रकार का समाज मानव मूल्यों और सामाजिक जीवन पर आधारित होगा। जयप्रकाश नारायण ने एक ऐसे समाज का चित्र प्रस्तत करने की कोशिश की है जिसमें किसी का कोई शोषण नहीं है। जिसमें आर्थिक और सामाजिक समानता होगी, सभी के लिए स्वतन्त्रता होगी। सभी के लिए खुशहाली और समृद्धि होगी।[24]

1948 के आते–आते जयप्रकाश नारायण महात्मा गाँधी के नजदीक आये और उनका आध्यात्मिक राजनीति की ओर झुकाव बढ़ा। अब उनका मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की ओर अविश्वास बढ़ने लगा। 1952में जयप्रकाश नारायण पूरी तरह गाँधीवादी बन गये। बोध गया सर्वोदय सम्मेलन 1954 में जयप्रकाश नारायण ने सर्वोदय और भूदान के बारे में बात कही। नयी समाज व्यवस्था वर्ग विहीन और जाति विहीन समाज की स्थापना में पहला प्रयास है। हमें एक समाजवादी समाज जिसके उद्देश्य स्वतन्त्रता, बन्धुत्व और शान्ति थे, की स्थापना ही नहीं करनी है उससे आगे सर्वोदयी समाज में परिवर्तित करनी हैं जो कि वास्तविक में लोगा को समाजवाद होगा। आज की प्रतियोगितावादी अर्थ–व्यवस्था को सहयोग पर आधारित सामाजिक अर्थव्यवस्था लाने की बात करते है। भूदान को सम्पूर्ण क्रांति (सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्र) का पहला कदम बताया है। उन्होने आगे कहा है कि इस समाज में सभी का कल्याण होगा प्रत्येक व्यक्ति इस में प्रसन्न और खुश रहेंगे। इस प्रकार के समाज में ऊंचे और नीचे व्यक्ति का कोई भेद नहीं होगा। सभी व्यक्ति समान होंगे।[25]

जयप्रकाश नारायण समाजवाद का एक ऐसा चित्र खीचना चाहते थे जिसमें सभी लोगों में खुशहाली और समृद्धि हो। लोगों के जीवन का संचालन स्वशासित संस्थाओं के द्वारा शासित हो। उन्हाने शक्ति का नीचे से ऊपर की ओर प्रवाह बताया। उस व्यवस्था में शोषण और गरीबी का कोई स्थान नहीं हो सकता। सभी को विकास के समान अवसर होंगे। समाज के भौतिक और नैतिक स्त्रोतों का विकास किया जायेगा और समाज की भौतिक आवश्यकताओं के अनुसार उनका प्रयाग किया जायेगा। राष्ट्रीय सम्पत्ति, सामाजिक, शैक्षणिक और अन्य सेवा का जो श्रम करते है उनमें उपभोग के लिए समान वितरण की व्यवस्था होगी। समाज में कोई विशेषाधिकार सम्पन्न वर्ग नहीं होगा। सभी को स्वतन्त्रता होगी। जमींदारों, राजकुमारों और पूंजीवादी व्यवस्था को समाप्त किया जायेगा सम्पूर्ण भूमि को पुनः वितरण किया जायेगा।[26] उनके सपनों के भारत के बारे में ''इस प्रकार मेरे सपनों का भारत एक ऐसा समुदाय है जिसमें हर एक साधन निर्बल की सेवा के लिए समर्पित होगा। वह ऐसा समुदाय है जिसमें मानवता की कद्र है। जिसमें सबको बराबर के अवसर प्राप्त हैं। वह समुदाय जिसमें शक्तिशाली बहुसंख्यक स्वयं ही निर्बल वर्ग अल्पसंख्याकों की बाधाओं को समझते हैं। वह एक ऐसा समुदाय है जिसमें हर एक साधन जनता की आवश्यकता पूर्ति में लगा है। उन्हे पर्याप्त भोजन, कपड़ा, मकान और पीने का पानी मुहैया करने में है।''[27]

जयप्रकाश नारायण की विचारधारा में कई मोड़ आये हैं। प्रारम्भिक काल में मार्क्सवादी विचार से प्रभावित

थे। बाद में लोकतान्त्रिक समाजवादी विचारधारा और अन्त में गाँधीवादी (सर्वोदयी) विचारधारा से प्राभावित थे। उनके विचार समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहे।

मूल्यांकन

जय प्रकाश नारायण और महात्मा गाँधी के समाजवाद सम्बन्धी विचारों पर अग्रांकित आधारों पर तुलना की जा सकती है। दोनों समाजवाद में राज्य की भूमिका (महात्मा गाँधी राज्य की भ्मिका को नगण्य मानते है जबकि जयप्रकाश नारायण राज्य की भूमिका को आवश्यक मानते हैं।) के आधार पर तुलना की जा सकती है। समाजवाद लाने के साधन (महात्मा गाँधी ट्रस्टीशिप और सत्याग्रह) इनके लिए साध्य साधन की पवित्रता की बात की है। जबकि जयप्रकाश नारायण ने समाजवाद लाने के लिए लोकतान्त्रिक एवं शान्तिपूर्ण साधनों, सर्वोदय और भूदान ग्रामदान की बात की है। जय प्रकाश नारायण अपने जीवन के प्रारम्भिक दिनों में जब वे मार्क्सवाद से प्रभावित थे तब महात्मा गाँधी के विचारों की आलोचना करते थे। 1948 के आते आते महात्मा गाँधो के विचारों की ओर झुकने लगे।

जयप्रकाश नारायण के अनुसार ''मार्क्सवादी क्रान्ति समाज को सामाजिक और आर्थिक समस्याओं से जल्दी और निश्चित रूप से मुक्ति दिला सकती है। समजा को बदला जा सकता है जबकि महात्मा गाँधी द्वारा बताया गया रास्ता बहुत धीमा और अनिश्चित है।''[28] अतः स्पष्ट है कि जयप्रकाश नारायण का अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में मार्क्सवादी समाजवादी विचारधारा से प्रभावित होने पर महात्मा गाँधी के ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त और राम राज्य की धारणा में विश्वास नहीं था। महात्मा गाँधी पूंजीपतियों को गरीबों के प्रति अपने व्यवहार सुधारने की सलाह देते है। जयप्रकाश नारायण का मानना है कि यह कार्य मुश्किल है। क्योंकि धनी लोग धन के प्रभाव में अन्धे हो जाते है। पूंजीपतियों के पास धन श्रमिकों के श्रम परिणाम है। इस प्रकार प्रोधों का यह कथन सही है कि सम्पत्ति चोरी है। वे महात्मा गाँधी को उच्च वर्ग के हितों की रक्षा करने वाला मानते हैं उनके अनुसार महात्मा गाँधी पूंजीपतियों और जमींदारों को बनाये रखना चाहते है। महात्मा गाँधी के बताये हुये रास्ते से भारत की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का समाधान होने वाला नहीं है। वह उस सामाजिक वातावरण माहौल को बदलना चाहते है जिसमें मानव का व्यवहार बनात है। जय प्रकाश नारायण राज्य को समाज में आर्थिक परिवर्तन लाने के लिए अपनी शक्ति का प्रयोग करने की सलाह देते है। वे महात्मा गाँधी के इस सिद्धान्त में विश्वास नहीं करते हैं कि वह राज्य सबसे अच्छा है जो सबसे कम शासन करता है।

जयप्रकाश नारायण का समाजवादी सिद्धानत उत्पादन के साधनों पर समाज का नियन्त्रण (सामाजीकरण) रखने की बात करते हैं। सामाजिक पुनर्निर्माण का प्रयत्न उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत स्वामित्व को समाप्ति से प्रारम्भ होना चाहिए।[29]

महात्मा गाँधी आरम्भ से ही एक समाज सुधारक अैर राष्ट्रवाही विचारक रहे हैं। उनके समाजवादी विचार सत्य और अहिंसा, राजनीतिक और आर्थिक विकेन्द्रीयकरण, ट्रस्टीशिप और शरीर श्रम पर आधारित है। महात्मा गाँधी ने अपने समाजवादी समाज में एक रामराज्य की कल्पना की है। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति प्रेम कर्तव्य तथा त्याग की भावना और दूसरों के अधिकारों का भी सम्मान करेंगे। व्यक्ति की स्वतन्त्रता को व्यक्ति के विकास के लिए आवश्यक मानते है। इसलिए महात्मा गाँधी ने व्यक्ति के कल्याण को अपना लक्ष्य बनाया है। रामराज्य में सामाजिक और आर्थिक समानता होगी। इस समाजवाद में राज्य की भूमिका का कम से कम होगी (जो कि थोरो के सिद्धान्त पर आधारित वह सरकार सबसे अच्छी हो जो सबसे कम शासन करती है।) जयप्रकाश नारायण ने अपनी पुस्तक ''माई पिक्चर ऑफ सोशलिज्म'' महात्मा गाँधी के प्रभाव से प्रभावित होकर लिखी। महात्मा गाँधी की मृत्यु के उपरान्त जयप्रकाश नारायण ने यह स्वीकार किया कि ''एक अच्छे समाज के निर्माण के उद्देश्य तक हमे अच्छे साधन ही पहुँचा सकते हैं।''[30] जुलाई 1950 के समाजवादी पार्टी के मद्रास अधिवेशन में जयप्रकाश नारायण ने यह माना कि ''यदि आज मार्क्स जिन्दा हाता तो अपने आपको अलग छोड़कर महात्मा गाँधी के विचारों और तकनीकी के नजदीक जरूर आता है।[31]

महात्मा गाँधी के विचारों का लक्ष्य मुख्य रूप से व्यक्ति का कल्याण करना है। यही उनके विचारों का मूल मन्त्र है। जबकि जयप्रकाश नारायण व्यक्ति काकल्याण एवं पुनः निर्माण करने के साथ–साथ समाज का भी सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों पर आधारित है। जबकि जय प्रकाश नारायण का समाजवाद शान्तिपूर्ण और क्रमिक सांविधानिक साधनों पर आधारित है।

महात्मा गाँधी के समाजवाद में राज्य की भूमिका कम से कम है। एक राज्य विहीन समाज की कल्पना की है जिसमें सत्ता जनता के हाथों में होने की बात करते हैं। जबकि जयप्रकाश नारायण समाजवाद में सत्ता और लोक समर्थन दोनों को आवश्यक मानते हैं। उनका विश्वास है कि, राज्य सत्ता के अभाव में सामाजिक पुनः निर्माण की योजनाओं को क्रियान्वित करना एक मुश्किल कार्य है। क्योंकि किसी कार्य को करने के लिए प्राधिकार का होना आवश्यक है। उन्होने कहा है आपके हाथ में जब राज्य सत्ता है तब आप विधि निर्माण कर सकते हैं। आधुनिक विज्ञान द्वारा उपलब्ध प्रचार प्रसार और शिक्षण के उत्तम साधनों का उपयोग कर सकते है और अपने संकल्प को क्रियान्वित कर सकते हैं। प्रतिरोध को कुचलने के राज्यवाहिनी पुलिस सेना का प्रयोग किया जा सकता है। हर विधि के पीछे राज्य की शक्ति होती है जो समझाकर और अन्त में बल प्रयोग से काम करा सकती है। आधुनिक समय में कोई दल बिना राज्य शक्ति पर अधिकार किये समाजवाद की स्थापना नहीं कर सकता है और लोक समर्थन यानी विरोधियों से निपटने के लिए पयाप्त हो तो समाजवाद की स्थापना सम्भव है।[32]

समाजवाद का यह सिद्धान्त व्यक्ति के परिवर्तन के बिना समाज का परिवर्तन सुरक्षित नहीं है, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन के लिए समाज और व्यक्ति दोनों का ही परिवर्तन होने से सम्भव हो सकता है। व्यक्ति और समाज में सावयर और सावमयी का सम्बन्ध है।

निष्कर्ष

जयप्रकाश नारायण ने गाँधी के रचनात्मक कार्यक्रम और लड़ने की तकनीक सत्याग्रह के बीच एक सामंजस्य बैठाने की जरूरत समझी। यह माना जा सकता है कि महात्मा गाँधी के विचारों में एक स्पष्ट आदर्शवाद के दर्शन होते हैं क्योंकि महात्मा गाँधी क समाजवाद व रामराज्य न तो कहीं पृथ्वी पर स्थापित हुआ और न ही स्थापित होने के आसार नजर आते हैं और न ही यह सम्भव है। जबकि जयप्रकाश नारायण के विचारों में काफी हद तक बहुत कुछ व्यवहारिकता देखने को मिलती है।

वैसे दोनो का एक उद्देश्य है–मानव का कल्याण करना। मानव को शोषण, विषमता और कष्टों से मुक्ति दिलाना। जयप्रकाश नारायण–मार्क्सवाद से समाजवाद तथा समाजवाद से गाँधीवाद (सर्वोदयवाद) की तरफ बढ़े।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सी.इ.एम. जोड़–इन्ट्रोडक्शन टू मॉडर्न पौलिटिकल थ्योरी 1946 लन्दन पृष्ठ 40।
2. रामजीसिंह–गाँधी दर्शन सीमांसा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1986 पृष्ठ 21।
3. उपरोक्त– पृष्ठ 31।
4. गोपीनाथ दीक्षित द्वारा उर्द्धत किया गया पृष्ठ 114
5. हरिजन–30.7.1937।
6. हरिजन–13.7.1947।
7. उपरोक्त।
8. सम्पूर्ण गाँधी वांड.मय–खण्ड 72, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली पृष्ठ 426।
9. यंग इंडिया–11.2.1929।
10. सम्पूर्ण गाँधी वांड.मय–खण्ड 68 प्रकाशन विभाग सूचना एंव प्रसारण मन्त्रालय भारत सरकार नई दिल्ली पृष्ठ 431।
11. हरिजन–16.3.1940।
12. दादा धर्माधिकारो द्वारा लिखित विभूति सम्पन्न विचार धारा, उर्द्धत जयप्रकाश नारायण (मेरी विचारधारा भाग–1) वाराणसी, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, 1974 पृष्ठ 10।
13. जयप्रकाश नारायण–टुवर्डस स्ट्रगल (सया) यूसूफ, पद्मा प्रकाशन मुम्बई 1946 पृष्ठ 65।
14. जयप्रकाश नारायण–समाजवाद क्यों? वाराणसी अखिल भारतीय कांग्रेस समाजवादी दल 1936 पृष्ठ 1।
15. आर.सी.गुप्ता–फॉम माक्सिज्म टू टोटल रिवोल्यूशन, स्टलिंग प्रकाशन, नई दिल्ली 1981 पृष्ठ 56।
16. नोट 14 – पृष्ठ 88।
17. जयप्रकाश नारायण–मेरी विचार यात्रा भाग–1, सर्व सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी पृष्ठ 25।
18. नोट 14– पृष्ठ 6, 7।
19. रिर्पार्ट–समाजवादी पार्टी का आठवां वार्षिक सम्मेलन, मद्रास, जुलाई 8.12.1950 पृष्ठ 55।
20. नोट 14– पृष्ठ 28–29।
21. नोट 14– पृष्ठ 20।
22. जयप्रकाश नारायण–(सम्पादक विमल प्रसाद) फ्रॉम सोशलिज्म टू सर्वोदय, सर्व सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी 1959 पृष्ठ 21।
23. रिपोर्ट–समाजवादी पार्टी वार्षिक सम्मेलन, पटना 1949 पृष्ठ 58।
24. जनता–वो.नं. 37 अक्टूबर 2, 1955 पृष्ठ 3।
25. जनता–वो. 8 नं. 26 जनवरी 11, 1953 पृष्ठ 11।
26. भक्तराम पाराशर–लोक नायक–जीवन दर्शन, किताब घर नई दिल्ली 1979 पृष्ठ 104।
27. जयप्रकाश नारायण–(सम्पादक विमल प्रसाद) समाजवाद सर्वोदय और लोकतन्त्र, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई 1964 पृष्ठ 53।
28. शंकर घोष–सोशलिज्म एण्ड कम्यूनिज्म इन इण्डिया मुम्बई 1971 पृष्ठ 263।
29. रिपोर्ट–समाजवादी पार्टी वार्षिक सम्मेलन, नासिक मार्च 19–21, 1948 पृष्ठ 97।
30. जयप्रकाश नारायण–माई पिक्चर ऑफ सोशलिज्म, जनता, नवम्बर 24, 1946 पृष्ठ 5।
31. रिपार्ट–समाजवादी पार्टी का आठवां वार्षिक सम्मेलन मद्रास, जुलाई 1950 पृष्ठ 55।
32. नोट– पृष्ठ 3।